सीएमपीडीआई में भू-जल प्रबंधन पर कार्यशाला

कार्यशाला का उदघाटन करते कंपनी के अधिकारी

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। सोसाइटी ऑफ जियो साइंटिक झारखंड एवं चैप्टर ऑफ इंटरनेशनल हाइड्रोजियोलॉजिस्ट एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को सीएमपीडीआई में भू-जल प्रबंधन पर राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसका उदघाटन खान एवं भूतत्व विभाग के सचिव अबू बकर सिद्धकी ने किया। इस मौके पर सीसीएल एवं सीएमपीडीआई सीएमडी क्रमशः गोपाल सिंह एवं शेखर सरन मौजूद थे। सम्मेलन में आये भू-वैज्ञानिकों ने अपने शैक्षणिक अनुभवों को एवं आपस में साझा किया। सम्मेलन में देशभर के सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं, शोध संस्थाओं, उद्योगों एवं शिक्षाविदों द्वारा खनन एवं समाजिक क्षेत्रों में भू-जल प्रबंधन पर अधारित समास्याओं तथा उसके समाधानों पर विस्तृत चर्चा की गयी। इसके अलावा इस सम्मेलन में भू-जल वैज्ञानिक अपने विचारों से झारखंड में व्याप्त भू-जल समास्या निराकरण पर प्रकाश डाला।

सम्मेलन में केरल, तमिलनाड़, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, झारखंड, पंजाब, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़,असम, हरियाणा, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश आदि राज्यों में भू-जल की समास्या और उसके समाधान पर 52 तकनीकी शोध पत्र प्रस्तुत किया गया। सम्मेलन पूरे देश से 300 सौ से अधिक भू-वैज्ञानिकों ने भाग लिया और ग्राउंड वाटर की समास्याओं पर प्रकाश डाला। कार्यशाला का समापन समारोह बतौर मुख्य अतिथि पद्मश्री सिमोन उरॉव ने किया और अपने विचारों से अवगत कराया।

नेशनल कांफ्रेंस ऑन ग्राउंड वाटर मैनेजमेंट पर कार्यशाला, बोले विशेषज्ञ

झारखंड में तेजी से गिर रहा है भूमिगत जलस्तर

प्रमुख संवाददाता ▷ रांची

झारखंड समेत पूरे देश में तेजी से भूमिगत जल स्तर गिर रहा है. यदि जल्द ठोस कदम नहीं उठाया गया, तो आनेवाली पीढ़ियों को भयंकर जल संकट का सामना करना पड़ सकता है. बंद पड़ी खदानों व अन्य स्रोतों के पानी का ट्रीटमेंट कर इस्तेमाल करने व प्रत्येक घर में वाटर रिचार्ज सिस्टम बनाने की जरूरत है. उक्त बातें सीएमपीडीआइ सभागार में नेशनल कांफ्रेंस ऑन ग्राउंड वाटर मैनेजमेंट इन माइनिंग एंड सोशल सेक्टर्स पर आयोजित कार्यशाला में भू-वैज्ञानिक व विशेषज्ञों ने कही.

कार्यशाला का आयोजन इंडियन नेशनल चैप्टर ऑफ इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ हाइड्रो जियोलॉजिस्ट्स एवं सोसाइटी ऑफ जियो साइंटिस्ट झारखंड द्वारा किया गया था. कार्यशाला में कुल 29 शोध पेपर प्रस्तुत किये गये. मुख्य अतिथि खान सचिव अबु बकर सिद्दीख ने कहा कि आज जल मुफ्त में उपलब्ध है, तो हम इसकी महत्ता नहीं समझ पा रहे हैं. झारखंड में भी तेजी से जल स्तर गिर रहा है. धनबाद में अलार्मिंग स्थिति है. पानी बचाने के लिए अभी तक हम कोई ठोस योजना नहीं बना पाये हैं. 80 प्रतिशत बारिश का पानी बर्बाद हो जाता है. उन्होंने कहा कि माइनिंग प्लान बनाते समय पानी बचाने की प्लानिंग भी होनी चाहिए. अवैध माइनिंग और जल प्रदूषण भी एक समस्या है.

सीसीएल के सीएमडी गोपाल सिंह ने कहा कि धरती पर केवल 2.5 प्रतिशत ही फ्रेश वाटर उपलब्ध है. एक प्रतिशत की दर से पानी की खपत प्रत्येक वर्ष बढ़ रही है. भारत में सबसे अधिक निर्भरता ग्राउंड वाटर पर है. हमलोग तेजी से इसे सोख रहे हैं. वह दिन दूर नहीं जब पानी कैप्सूल में मिलने लगेगा. उन्होंने कहा कि खनन उद्योग पानी का सबसे बड़ा दुश्मन है. इसके बावजूद सीसीएल पानी बचाने की दिशा में हर संभव कदम उठायेगा. इस मौके पर सोवेनियर का विमोचन किया गया. आइएनसी आइएएच के सचिव डॉ दीपंकर साहा, एसजीएसजे के अध्यक्ष एवी सहाय, सीजीडब्ल्यूबी के पूर्व अध्यक्ष डॉ डीके चड्ढा, डॉ अनल सिन्हा आदि ने भी अपने विचार रखे.

सोवेनियर का विमोचन करते अतिथि.

कड़े कानून बनाने की जरूरत

खान विभाग की भूतत्व निदेशक कुमारी अंजलि ने कहा कि भूमिगत जल के दोहन पर कड़े कानून बनाने की जरूरत है. बारिश के पानी के स्टोर करने के लिए तालाब और रिजवार्यर बनाने की जरूरत है.

सभी को करनी होगी जल बचाने की पहल : सिमोन उरांव

पद्मश्री सिमोन उरांव ने कहा कि जल संकट से तभी निजात मिल सकती है, जब धरती के नीचे पर्याप्त जल होगा. धरती के नीचे जल हो, इसके लिए नीचे से लेकर ऊपर तक के लोगों को मिल कर काम करना होगा. ज्यादा से ज्यादा पानी धरती में भेजने की कोशिश करनी होगी. पेड़-पौधे लगाने होंगे.

चीन-अमेरिका मिलकर जितना पानी खर्च करते हैं, उससे अधिक पानी की खपत भारत में : साहा

प्रमुख संवाददाता ▷ रांची

चीन और अमेरिका दोनों देश मिल कर जितना पानी की खपत नहीं करते, उससे कहीं अधिक पानी की खपत भारत में है. यह चिंता का विषय है. उक्त बातें इंडियन नेशनल चैप्टर ऑफ इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ हाइड्रो जियोलॉजिस्ट्स (आइएनसी-आइएएच) के सचिव डॉ दीपंकर साहा ने कही. श्री साहा ग्राउंड वाटर मैनेजमेंट पर आयोजित सेमिनार में हिस्सा लेने रांची आये हुए हैं.

प्रभात खबर से बातचीत के दौरान श्री साहा ने कहा कि भारत में 2.40 करोड़ कुआं है, जिसका इस्तेमाल सिंचाई में होता है. दुनिया में सबसे अधिक लगभग 250 किमी क्यूब पानी की खपत भारत में है. अमेरिका और चीन मिल कर भी पानी का इतना इस्तेमाल नहीं करते हैं. उन्होंने कहा कि पानी को सबसे ज्यादा नुकसान माइनिंग इंडस्ट्रीज से हो रहा है. श्री साहा ने कहा कि झारखंड में भूमिगत जल की स्थित और भी खराब है. गर्मी में जलस्तर काफी नीचे चला जाता है. साहेबगंज में आर्सेनिक, तो पलामू के पानी में फ्लोराइड जैसी समस्या है.

उन्होंने कहा कि बंद खदानों में जमा पानी एसिडिक हो जाता है. इसके ट्रीटमेंट की तकनीक लानी होगी, ताकि इसका इस्तेमाल आम लोग कर सकें. इससे कुछ हद तक जल संकट पर काबू पाया जा सकता है. श्री साहा ने कहा कि प्रत्येक घर में वाटर रिचार्ज होगा, तभी ग्राउंड वाटर का संरक्षण हो सकेगा. इसके लिए एक मुहिम चलाने की जरूरत है. नदी-तालाब के पानी को भी प्रदूषित होने से बचाना होगा.

चिंता

- भारत में सबसे ज्यादा लगभग 250 किमी क्यूब पानी की खपत

नेशनल कांफ्रेंस ऑन ग्राउंड वाटर मैनेजमेंट पर कार्यशाला, बोले विशेषज्ञ

झारखंड में तेजी से गिर रहा है भूमिगत जलस्तर

प्रमुख संवाददाता ▷ रांची

झारखंड समेत पूरे देश में तेजी से भूमिगत जल स्तर गिर रहा है. यदि जल्द ठोस कदम नहीं उठाया गया, तो आनेवाली पीढ़ियों को भयंकर जल संकट का सामना करना पड़ सकता है. बंद पड़ी खदानों व अन्य स्रोतों के पानी का ट्रीटमेंट कर इस्तेमाल करने व प्रत्येक घर में वाटर रिचार्ज सिस्टम बनाने की जरूरत है. उक्त बातें सीएमपीडीआइ सभागार में नेशनल कांफ्रेंस ऑन ग्राउंड वाटर मैनेजमेंट इन माइनिंग एंड सोशल सेक्टर्स पर आयोजित कार्यशाला में भू-वैज्ञानिक व विशेषज्ञों ने कही.

कार्यशाला का आयोजन इंडियन नेशनल चैप्टर ऑफ इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ हाइड्रो जियोलॉजिस्ट्स एवं सोसाइटी ऑफ जियो साइंटिस्ट झारखंड द्वारा किया गया था. कार्यशाला में कुल 29 शोध पेपर प्रस्तुत किये गये. मुख्य अतिथि खान सचिव अबु बकर सिद्दीख ने कहा कि आज जल मुफ्त में उपलब्ध है, तो हम इसकी महत्ता नहीं समझ पा रहे हैं. झारखंड में भी तेजी से जल स्तर गिर रहा है. धनबाद में अलार्मिंग स्थिति है. पानी बचाने के लिए अभी तक हम कोई ठोस योजना नहीं बना पाये हैं. 80 प्रतिशत बारिश का पानी बर्बाद हो जाता है. उन्होंने कहा कि माइनिंग प्लान बनाते समय पानी बचाने की प्लानिंग भी होनी चाहिए. अवैध माइनिंग और जल प्रदूषण भी एक समस्या है.

सीसीएल के सीएमडी गोपाल सिंह ने कहा कि धरती पर केवल 2.5 प्रतिशत ही फ्रेश वाटर उपलब्ध है. एक प्रतिशत की दर से पानी की खपत प्रत्येक वर्ष बढ़ रही है. भारत में सबसे अधिक निर्भरता ग्राउंड वाटर पर है. हमलोग तेजी से इसे सोख रहे हैं. वह दिन दूर नहीं जब पानी कैप्सूल में मिलने लगेगा. उन्होंने कहा कि खनन उद्योग पानी का सबसे बड़ा दुश्मन है. इसके बावजूद सीसीएल पानी बचाने की दिशा में हर संभव कदम उठायेगा. इस मौके पर सोवेनियर का विमोचन किया गया. आइएनसी आइएएच के सचिव डॉ दीपंकर साहा, एसजीएसजे के अध्यक्ष एवी सहाय, सीजीडब्ल्यूबी के पूर्व अध्यक्ष डॉ डीके चड्ढा, डॉ अनल सिन्हा आदि ने भी अपने विचार रखे.

सोवेनियर का विमोचन करते अतिथि.

कड़े कानून बनाने की जरूरत

खान विभाग की भूतत्व निदेशक कुमारी अंजलि ने कहा कि भूमिगत जल के दोहन पर कड़े कानून बनाने की जरूरत है. बारिश के पानी के स्टोर करने के लिए तालाब और रिजवार्यर बनाने की जरूरत है.

सभी को करनी होगी जल बचाने की पहल : सिमोन उरांव

पद्मश्री सिमोन उरांव ने कहा कि जल संकट से तभी निजात मिल सकती है, जब धरती के नीचे पर्याप्त जल होगा. धरती के नीचे जल हो, इसके लिए नीचे से लेकर ऊपर तक के लोगों को मिल कर काम करना होगा. ज्यादा से ज्यादा पानी धरती में भेजने की कोशिश करनी होगी. पेड़-पौधे लगाने होंगे.

चीन-अमेरिका मिलकर जितना पानी खर्च करते हैं, उससे अधिक पानी की खपत भारत में : साहा

प्रमुख संवाददाता ▷ रांची

चीन और अमेरिका दोनों देश मिल कर जितना पानी की खपत नहीं करते, उससे कहीं अधिक पानी की खपत भारत में है. यह चिंता का विषय है. उक्त बातें इंडियन नेशनल चैप्टर ऑफ इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ हाइड्रो जियोलॉजिस्ट्स (आइएनसी-आइएएच) के सचिव डॉ दीपंकर साहा ने कही. श्री साहा ग्राउंड वाटर मैनेजमेंट पर आयोजित सेमिनार में हिस्सा लेने रांची आये हुए हैं.

प्रभात खबर से बातचीत के दौरान श्री साहा ने कहा कि भारत में 2.40 करोड़ कुआं है, जिसका इस्तेमाल सिंचाई में होता है. दुनिया में सबसे अधिक लगभग 250 किमी क्यूब पानी की खपत भारत में है. अमेरिका और चीन मिल कर भी पानी का इतना इस्तेमाल नहीं करते हैं. उन्होंने कहा कि पानी को सबसे ज्यादा नुकसान माइनिंग इंडस्ट्रीज से हो रहा है. श्री साहा ने कहा कि झारखंड में भूमिगत जल की स्थित और भी खराब है. गर्मी में जलस्तर काफी नीचे चला जाता है. साहेबगंज में आर्सेनिक, तो पलामू के पानी में फ्लोराइड जैसी समस्या है.

उन्होंने कहा कि बंद खदानों में जमा पानी एसिडिक हो जाता है. इसके ट्रीटमेंट की तकनीक लानी होगी, ताकि इसका इस्तेमाल आम लोग कर सकें. इससे कुछ हद तक जल संकट पर काबू पाया जा सकता है. श्री साहा ने कहा कि प्रत्येक घर में वाटर रिचार्ज होगा, तभी ग्राउंड वाटर का संरक्षण हो सकेगा. इसके लिए एक मुहिम चलाने की जरूरत है. नदी-तालाब के पानी को भी प्रदूषित होने से बचाना होगा.

चिंता

- भारत में सबसे ज्यादा लगभग 250 किमी क्यूब पानी की खपत

भूजल संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक करना जरूरी

रांची | प्रमुख संवाददाता

भूजल संरक्षण व उसकी उपयोगिता पर राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन शनिवार को सीएमपीडीआई के मधुरी सभागार में किया गया। सोसाइटी ऑफ जियो साइंटिस्ट, झारखंड व इंडियन चैप्टर ऑफ इंटरनेशनल हाइड्रोजियोलॉजिस्ट एसोसिएशन ने इसका आयोजन किया।

इसमें खान और भूतत्व विभाग के सचिव अबू बकर सिद्दिकी ने कहा कि भूजल संरक्षण के प्रति जागरुकता के लिए व्यापक प्रचार-प्रसार की जरूरत है। उन्होंने भूतत्वेत्ताओं से इन मुद्दों के निदान के लिए व्यावहारिक पहल करने की अपील की। मौके पर सीसीएल के प्रबंध निदेशक गोपाल सिंह और सीएमपीडीआई के शेखर शरण मौजूद थे।

भूजल प्रबंधन से जुड़ी समस्याओं पर चर्चा हुई : सम्मेलन में भूजल प्रबंधन से जुड़ी समस्याओं पर चर्चा की गई। समापन सत्र में जल पुरुष सिमोन उरांव मौजूद थे। उन्होंने झारखंड व आसपास के क्षेत्रों में गहराते भूजल संकट पर चिंता जताते हुए सही जल प्रबंधन पर जोर दिया। कार्यक्रम में 300 भू-वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। इसमें 52 तकनीकी शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।